International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 12; December 2016; Page No. 215-217

अनाथ एवं सनाथ विद्यार्थियों की मनोसामाजिक समस्याओं का अधिगम व्यवहार पर प्रभाव

[1] राधा गुप्ता, [2] डॉ0 हिमानी उपाध्याय

[1] सहायक प्राध्यापिका हवाबाग महिला महाविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत।
[2] विभागाध्यक्ष शिक्षा विभाग, हवाबाग महिला महाविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य अनाथ एवं सनाथ विद्यार्थियों की मनोसामाजिक समस्याओं का अधिगम व्यवहार पर प्रभाव का अध्ययन करना था। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। मनोसामाजिक समस्या मापने हेतु शोधकर्ती द्वारा निर्मित प्रमाणीकृत मनोसामाजिक समस्या मापनी का प्रयोग किया गया जिस हेतु 368 अनाथ एवं 427 सनाथ विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया तत्पश्चात चयनित अनाथ एवं सनाथ विद्यार्थियों पर उपकरण प्रशासित किया गया। अधिगम व्यवहार मापन हेतु डॉ. सी. वी. सक्सेना द्वारा निर्मित अधिगम व्यवहार मापनी का प्रयोग किया गया। परिणामों से स्पष्ट होता है कि अनाथ–सनाथ विद्यार्थियों की मनोसामाजिक समस्याओं का अधिगम व्यवहार पर 0.05 सार्थक स्तर पर अन्तर पाया गया।

मूल शब्दः अनाथ एवं सनाथ विद्यार्थियों, मनोसामाजिक समस्याओं

1. प्रस्तावना
अधिगम–सीखना, अनुभव द्वारा व्यवहार में परिवर्तन करना ही सीखना है। आदत, ज्ञान ओर अभिवृत्तियों को अर्जित करना ही सीखना है। बालक जन्म लेने के पश्चात जीवन पर्यन्त अपने वातावरण व स्वयं के प्रति अनुकूलन करने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता रहता है एवं सीखना रहता है। किसी भी कार्य को सीखना अधिगम कहलाता है।
''अधिगम का आशय किसी निश्चित परिस्थितियों में बार–बार होने वाले अनुभव के आधार पर प्राणी में होने वाले स्थायी परिवर्तन से है, किन्तु यह परिवर्तन उसकी मूल प्रवृत्ति, परिपक्वता या अस्थाई स्थिति के कारण न हो।''

– हीलगार्ड एवं बोवर

अधिगम का तात्पर्य अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन से है जो अनुभव के कारण व्यवहार या मानसिक सहचर्य में होता है। अधिगम व्यवहार, शैक्षिक चिन्ता, स्वचेतना एवं शैक्षिक उपलब्धि आदि बालक की शिक्षा के एक ही पहलू हैं जो आपस में एक दूसरे से संबंधित है। बालक के अधिगम व्यवहार के पीछे कई कारक होते हैं। (1) वातावरणीय कारक (पारिवारिक, सामाजिक, विद्यालयी वातावरण)। (2) व्यक्तिक कारक (बौद्धिक स्तर, अध्ययन संबंधी आदत, योग्यता, रूचि, शारीरिक, मानसिक दशा) आदि आते ही ये सभी कारक बालक के अधिगम व्यवहार को प्रेरित करते हैं। अधिगम व्यवहार अधिगम की एक सतत प्रक्रिया ही जब बालक को किसी प्रकार की मनोसामाजिक समस्या चिन्ता, संवेगात्मक परिपक्वता, सुरक्षा, आत्म–सम्मान, प्यार एवं लगाव, अकेलापन आदि हो तो कहीं ना कहीं बालक के व्यक्तित्व के आकार देने में व्यवधान डालती है उन्हीं में से, अधिगम व्यवहार भी प्रभावित होता है। सेडलिन (1994) ने अपने अध्ययन से निष्कर्ष निकाला कि जिन बच्चों को घर व विद्यालय में सामाजिक स्वीकार्यता प्राप्त होती है उनमें अधिगम व्यवहार बेहतर पाया जाता है।
औजोमन एवं विलकिनसिन (1949) ने यह पाया गया कि जिन बच्चों को उचित विद्यालयी, पारिवारिक वातावरण, सकारात्मक होता है तो उनमें अधिगम व्यवहार का उचित विकास होता है। उपर्युक्ता शोधों से पता चला कि अधिगम व्यवहार को प्रभावित करने वाले बालक की रूचि योग्यता, स्वास्थ्य, मानसिक स्थिति, विद्यालयी वातावरण एवं पारिवारिक वातावरण से प्रभावित होता है। व्यक्ति के जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया अधिगम व्यवहार बालक के बाल्यावस्था से ही शुरू हो जाती है। यदि बालक को अपने माता–पिता से प्यार सुरक्षा, संरक्षण, जरूरते, स्वतंत्रता, आर्थिक सहायता उचित रूप से मिलती है तो बालक को सामान्यतः किसी प्रकार की समस्या नहीं होती है। लेकिन कारणवश उपयुक्त सुविधा ना मिले तो बालक में विभिन्न मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न हो जाती है। उस समस्याओं के कारण बालक में अधिगम व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है तो क्या ये समस्याएँ अधिगम व्यवहार को प्रभावित करती है? क्या फिर अनाय एवं सनाय विद्यार्थियों की मनोसामाजिक समस्याओं का उनके व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई अंतर पाया जाता है? उपरोक्त प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने हेतु शोधकर्त्ती ने वर्तमान शोध कार्य का चयन किया।
''अनाथ एवं सनाथ विद्यार्थियों की मनोसामाजिक समस्याओं का अधिगम व्यवहार पर प्रभाव।''

2. उद्देश्य
अनाथ एवं सनाथ विद्यार्थियों के मनोसामाजिक समस्याओं का व्यैयक्तिक एवं परस्पर अंतक्रिया का अधिगम व्यवहार पर प्रभाव का अध्ययन करना।

3. परिकल्पनाएँ
3.1 उच्च औसत एवं निम्न मनोसामाजिक समस्या वाले विद्यार्थियों के अधिगम व्यवहार के प्राप्तांकों के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
3.2 अनाथ एवं सनाथ विद्यार्थियों के अधिगम व्यवहार के प्राप्तांकों के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
3.3 उच्च औसत एवं निम्न मनोसामाजिक समस्या वाले अनाथ एवं सनाथ विद्यार्थियों के परस्पर अन्तक्रिया का अधिगम व्यवहार पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

4. शोध विधि

प्रस्तुत शोधकार्य में विवरणात्मक सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया।

5. न्यादर्श

शोधकर्त्री द्वारा मध्यप्रदेश के बाल्य कल्याण समित (CWC) द्वारा पंजीकृत 47 बालगृहों में से 08 बालगृह का एवं 08 मान्यता प्राप्त विद्यालयों का यादृच्छिक विधि से चयन किया। चयनित बालगृह से 12 से 18 वर्ष के अनाथ बालक–बालिकाओं (368) एवं चयनित विद्यालयों में से 12 से 18 वर्ष के बालक बालिकाओं (427) को प्रतिदर्श के रूप में लिया।

6. उपकरण

- स्वतंत्र चर मापन हेतु प्रमाणीकृत मनोसामाजिक समस्या मापनी (स्वनिर्मित)
- अधिगम व्यवहार मापनी (डॉ. सी.पी.सक्सेना)

6. परिणाम

तालिका 1: उच्च औसत एवं निम्न मनोसामाजिक समस्या वाले अनाथ एवं सनाथ विद्यार्थियों के अधिगम व्यवहार की संख्या, मध्यमान एवं मानक विचलन

मनोसामाजिक समस्या	विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
उच्च	अनाथ	158	25.1582	8.85447
	सनाथ	44	22.9545	8.03178
औसत	अनाथ	190	27.4105	26.35934
	सनाथ	302	25.8179	8.03956
निम्न	अनाथ	20	31.6000	7.63234
	सनाथ	21	28.8272	7.43268
कुल	अनाथ	358	26.6712	19.92405
	सनाथ	427	26.0937	8.06527

तलिका 2: उच्च औसत एवं निम्न मनोसामाजिक समस्या वाल अनाथ एवं सनाथ विद्यार्थियों को अधिगम व्यवहार हेतु (2x3) प्रसरण विश्लेषण की सारांश तालिका

क्र. स	स्त्रोत	स्वतंत्रता का अंश	समस्त वर्गो का योग	मध्यमान वर्गों का योग	'एफ' अनुपात
1.	मनोसामाजिक समस्याएँ	2	1671.276	835.638	3.826*
2.	अनाय एवं सनाथ	1	455.942	455.942	2.088
3.	मनोसामाजिक समस्या एवं अनाथ एवं सनाथ	2	16.787	8.394	0.038

'0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता हेतु मान–2.00

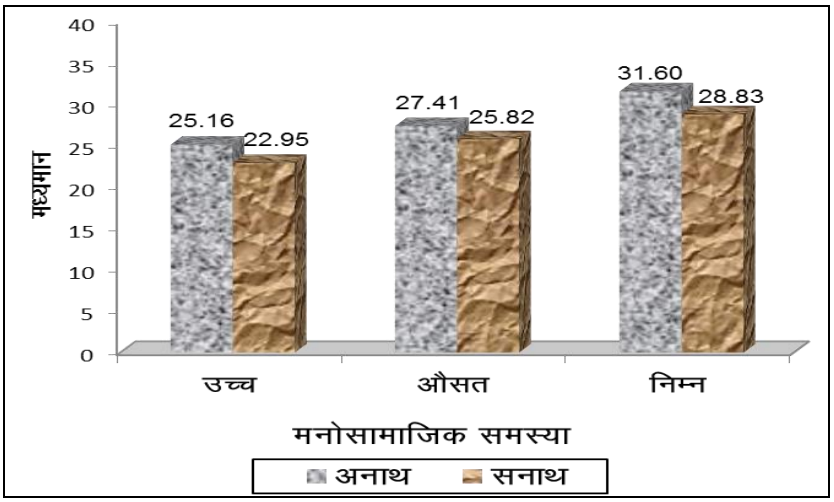

आकृति 1: उच्च, औसत तथा निम्न मनोसामाजिक समस्या वाले अनाथ एवं सनाथ विद्यार्थियों के अधिगम व्यवहार के मध्यमान का आलेखन

तलिका क्रमांक 2 से दृष्टिगोचर होता है कि उच्च औसत एवं निम्न मनोसामाजिक समस्या वाले विद्यार्थियों के अधिगम व्यवहार का df 2/793 पर F मान 3.862 पाया गया जो 0.05 सार्थक स्तर पर सार्थक अंतर की दर्शाता है। अतः बनाई गई शून्य परिकल्पना 2.1 उच्च औसत एवं निम्न मनोसामाजिक समस्या वाले विद्यार्थियों के अधिगम व्यवहार में प्राप्तांकों के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है। अमान्य होती है।

उच्च औसत एवं निम्न मनोसामाजिक समस्या वाले विद्यार्थियों के समूहों के अधिगम व्यवहार के मध्य सार्थक अंतर है या नहीं यह जानने में लिए डंकन का मल्टीपल रेंज टेस्ट लगाया गया जिसके परिणाम तालिका क्रमांक 3 से प्रदर्शित है।

तालिका 3: उच्च औसत एवं निम्न मनोसामाजिक समस्या वाले विद्यार्थियां के समूहों के मध्य सार्थक अंतर

मनोसामाजिक समस्या	संख्या	मध्यमान	औसत	निम्न
उच्च	202	24.6782	सार्थक अंतर नहीं है।'	P<0.01**
औसत	492	26.3762		P<0.05*
निम्न	101	29.3762		

'0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता हेतु मान–2.00

'0.01 विश्वास के स्तर पर सार्थकता हेतु मान–2.66

उपर्युक्त तालिका 3 से स्पष्ट होता है कि उच्च एवं औसत मनोसामाजिक समस्या वाले विद्यार्थियों के अधिगम व्यवहार के प्राप्तांकों के मध्यमानों के मध्य 0.05 सार्थक स्तर पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया अर्थात् उच्च एवं औसत मनोसामाजिक समस्या वाले विद्यार्थियों का अधिगम व्यवहार लगभग एक समान पाया गया। उच्च एवं औसत मनोसामाजिक समस्या वाले विद्यार्थियों के अधिगम व्यवहार के प्राप्तांकों के मध्यमानों के मध्य 0.01 सार्थक स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया अर्थात् निम्न मनोसामाजिक समस्या वाले विद्यार्थियों का अधिगम व्यवहार का मध्यमान (29.3762) उच्च म.सा. स. वाले विद्यार्थियों के अधिगम व्यवहार के मध्यमान (24.6782) सार्थक रूप से उच्च पाया गया। औसत एवं निम्न म.सा.स. वाले विद्यार्थियों का अधिगम व्यवहार के प्राप्तांकों के मध्यमानों से मध्य 0. 05 सार्थक स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया। अर्थात् म.सा.स. वाले विद्यार्थियों के अधिगम व्यवहार का मध्यमान 26.4329 जो निम्न म. सा.स. बालकों के अधिगम व्यवहार के मध्यमान 29.3762 से सार्थक रूप से निम्न पाया गया।

तालिका क्रमांक 2 से विदित होता है कि अनाथ एवं सनाथ विद्यार्थियों के अधिगम व्यवहार का df 1/793 पर F मान 2.008 पाया गया जो 0.05 सार्थक स्तर पर सार्थक अंतर को नहीं दर्शाता है। अतः बनाई गई शून्य परिकल्पना 2.2 अनाथ एवं सनाथ विद्यार्थियों के अधिगम व्यवहार के प्राप्तांकों के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं होता है। अमान्य नहीं होती है।

तालिका क्रमांक 2 से स्पष्ट होता है कि उच्च औसत एवं निम्न मनोसामाजिक समस्या वाले अनाथ एवं सनाथ विद्यार्थियों का अधिगम व्यवहार का df 2/793 पर F मान 0.038 पाया जो 0.05 सार्थक स्तर पर सार्थक अंतर को नहीं दर्शाता है अतः बनाई गई शून्य परिकल्पना 2.3 उच्च औसत एवं निम्न मनोसामाजिक समस्या वाले अनाथ एवं सनाथ विद्यार्थियों की परस्पर अंतक्रिया का अधिगम व्यवहार पर कोई सार्थक अंतर नहीं पड़ता है। अमान्य नहीं होती है।

7. निष्कर्ष

1. उच्च एवं निम्न मनोसामाजिक समस्या वाले विद्यार्थियों का अधिगम व्यवहार लगभग समान पाया गया।
2. उच्च मनोसामाजिक समस्या वाले विद्यार्थियों का अधिगम व्यवहार निम्न मनोसामाजिक समस्या वाले विद्यार्थियों के अधिगम व्यवहार से निम्न पाया गया।
3. औसत मनोसामाजिक समस्या वाले विद्यार्थियों का अधिगम व्यहवार निम्न मनोसामाजिक समस्या वाले विद्यार्थियों के अधिगम व्यवहार से निम्न पाया गया।
4. अनाथ एवं सनाथ विद्यार्थियों का अधिगम व्यवहार सार्थक रूप से लगभग समान पाया गया।
5. उच्च औसत एवं निम्न मनोसामाजिक समस्या वाले अनाथ एवं सनाथ विद्यार्थियों के समूहों के परस्पर अंतक्रिया का अधिगम व्यवहार पर प्रभाव सार्थक रूप से लगभग समान पाया गया।

संदर्भ ग्रंथ

1. अस्थाना, मधु एवं बाल किरण, (1999) ''व्यक्तित्व मनोविज्ञान'', नवीनतम संस्करण मोती लाल बनारसीदास, दिल्ली।
2. अर्चना, दबे (2010), शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी संज्ञानात्मक योग्यता एवं अधिगम व्यवहार पर प्रभाव का अध्ययन अप्रकार्यत पी.एच.डी. शोध प्रबंध, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर।
3. भाटिया, हंसराज (1981), ''समाज मनोविज्ञान'', राजकमल, दिल्ली।
4. सिंह, रामपाल (2004–2008), ''अधिगम का मनोविज्ञानं'' चतुर्थ संस्करण, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।